स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

Vol. 8, ISSUE-2 (OCTOBER-DECEMBER 2018) ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

सम्पादक केरल विशेषांक :

प्रो. संजय एल. मादार

विभागाध्यक्ष, पी. जी. विभाग, दक्षिण भारत

हिंदी प्रचार सभा, कर्नाटक (धारवाड़)

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

सह सम्पादिका :

डॉ. रेखा सोनी

उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग

टाटिया वि.वि. श्रीगंगानगर

सह सम्पादिका :

डॉ. सुशीला आर्या

हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल

विश्वविद्यालय, भिवानी

सह सम्पादक :

समुद्र सिंह

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY (MARCH, JUNE, SEPTEMBER AND DECEMBER) RESEARCH JOURNAL

ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
कमरा नं. 175, लघु सचिवालय,
भिवानी–127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

उपकार्यालय :
सहदेव शास्त्री
शिवपुरी, नरवाना रोड़,
जीन्द (हरियाणा)
मो. 09416253826

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.grngo.org
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price	: Yearly	Life Time (14 Years)
Individual/Institutional :	501/-	5001/-

<u>*Disclaimer :*</u>
1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. संजय एल. मादार	7–7
2.	मानव गतिविधियाँ और पर्यावरण	डॉ. कमल विजयवर्गीयँ डॉ. सुनील बाघला	8–9
3.	सिमटते वन एवं अपकर्ष होता पर्यावरण	डॉ. राजेश कुमार	10–11
4.	स्वस्थ कृषि, स्वस्थ जीवन	डॉ. सुनील कुमार	12–13
5.	राजस्थान में नारी उत्थान व राष्ट्रीय आन्दोलन में उनका योगदान	डा. नीलम गौड़	14–15
6.	उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विभिन्न धर्मों के विद्यार्थियों के आत्म–सम्प्रत्यय, नैतिक निर्णय और धर्म निरपेक्ष अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन	Sharmail Anjum	16-21
7.	मातृत्व का बलात् बँटवारा : 'युद्ध और बुद्ध' के विशेष सन्दर्भ में	श्रीनिता.पी.आर	22–23
8.	दृश्यात्मक वास्तविकता से समृद्ध मंगलेश डबराल की काव्य संसक्ति	रम्या. एल	24–25
9.	Effects of band and politics on kashmir education system	Rakhi Devi	26-31
10.	प्रगतिवाद	पुनीता रानी	32–35
11.	खंड–खंड अग्नि के परिप्रेक्ष्य में अग्नि परीक्षा की प्रासंगिकता	डॉ. उर्मिला पोरवाल	36–41
12.	'किस्सा जाम का' : एक दृष्टि	डॉ. एस. एल. कुमारी	42–43
13.	जैन दर्शन में अहिंसा : शैक्षिक परिशीलन	डॉ. गिरधारीलाल शर्मा	44–47
14.	भारतीय आश्रम व्यवस्था में गृहस्थाश्रम : एक व्यापक दृष्टिकोण	डॉ. रणधीर कौशिक	48–51
15.	विशिष्टच्छात्राणां संस्कृतभाषाधिगमोपलब्धौ नव्यप्रवृत्तयः	Nandulal Mandal	52-55
16.	संगीत में शिव–शक्ति का वर्णन	डॉ. ज्योति विश्वकर्मा	56–57
17.	विस्थापन की त्रासदी : 'निर्वासन'	काजल	58–59
18.	आदिवासी जीवन की व्यथा – गाथा : धरती आबा के सन्दर्भ में	प्रत्यूष. पी.	60–69
19.	निराला की प्रगति चेतना	रेखा कुमारी	70–72
20.	Postcolonialism and Nationalism	Minakshi Devi	73-76
21.	स्त्री–पुरूष संबंधों का बदलता स्वरूप : 'अंतराल' उपन्यास के विशेष संदर्भ में	अजिना ओ.वी	77–78
22.	पथ–भ्रष्ट होती युवा–पीढ़ी... आख़रि ज़िम्मेदार कौन? (मॉरिशसीय साहित्यकार रामदेव धुरन्धर की कहानी 'आदमख़ोर के विशेष सन्दर्भ में)	संध्या मेनन	79–80
23.	हिन्दी के आदिवासी कहानीकार और उनकी कहानियाँ : एक संक्षिप्त परिचय	श्रीलेखा के.एन	81–85
24.	नरेश मेहता के खण्ड काव्य और मिथक	राखी क्लेमन्ट	86–90
25.	मलयालम कहानियों में स्त्री अस्मिता : संघर्ष एवँ प्रतिरोध		
26.	सितारा. एस. की कहानियों के संदर्भ में	डॉ. षबीला.के.एस.	91–93

27.	दृश्यात्मक वास्तविकता से समृद्ध मंगलेश डबराल की काव्य संसक्ति	रम्या	94–95
28.	'छप्पन तोले का करधन' में चित्रित बिखरते मानवीय मूल्य	उदय दीप्ती ए.एस.	96–98
29.	समकालीन कविता में सांप्रदायिक राजनीति का प्रतिरोध	महेष एस,	99–101
30.	साहित्य में मानव अधिकार	डॉ0 सुनीता सिंह	102–103
31.	संत रज्जब के साहित्य में सामाजिक समरसता व सद्भाव	वीरमाराम पटेल	104–107
32.	बैंकों में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग और महत्व	डॉ. एन. साजी, मिनि.बी.	108–111
33.	मन्नु भण्डारी की कहानियों में नारी	सूर्या. एस.	112–115
34.	हिन्दी, फ्रेन्च एवं अंग्रेजी के पर्यटन शब्दावली	डॉ जी. शांति डॉ. जी. जीवरत्न	116–120
35.	जनता की वेदना और निराला की कविता	डॉ. रामायण प्रसाद विश्वकर्मा	121–125
36.	स्वास्थ्य शिक्षाशिक्षणे योग शिक्षाया: नवीन शैक्षिक प्रवृत्तय:	अनुप विश्वास:	126–128
37.	हिंदी की नई–पुरानी कहानियाँ : अध्ययन एवं विवेचन	डॉ. चन्द्रकांत तिवारी	129–151
38.	21वीं सदी की प्रमुख महिला आत्मकथाओं में चित्रित नारी जीवन	सकीना अख़्तर	152–157
39.	A Note on Spenda System	Dr. (Mrs.) Rajendra	158-161
40.	शिक्षण एवं शिक्षक अध्यापकों का सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित व्यावसायिक विकास	डॉ. उमा सैनी	162–164
41.	मूल्यों को तोड़ती स्त्री–मन की चंचलता : 'मैं आ रहा हूँ' के विशेष संदर्भ मे	स्मिता एस.	165–167
42.	राष्ट्रवाद और हिन्दी साहित्य–स्वरुप एवं अवधारण (पुस्तक समीक्षा)	डॉ. रणजीत कुमार सिन्हा	168–169

Web. : www.grngo.org
Impact Factor : 2.587

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Oct.-December 2018 Page No. : 99-101

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

समकालीन कविता में सांप्रदायिक राजनीति का प्रतिरोध

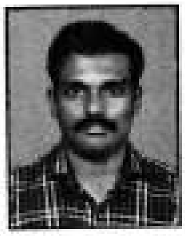

महेष एस

भारत में सांप्रदायिक राजनीति की शुरुआत उपनिवेश काल से हुई थी। उपनिवेश काल से पूर्व भी भारत में सांप्रदायिक कट्टरता तो विद्यमान थी पर शासन को इससे प्रत्यक्ष रूप से कुछ लेना देना नहीं था। अंग्रेज़ों ने ही सर्वप्रथम अपने फूट डालो और राज करो चाल के तहत सांप्रदायिक आग्रह को भटकाया। राम पुनियानि के शब्दों में " एक तरह से देखा जाए तो यह विरोधाभास–सा लगता है। सांप्रदायिक तनाव मद्ययुगीन काल में भी मिलते हैं। पर सांप्रदायिक राजनीति का उदय उपनिवेशवाद के दौरान हुआ। औद्योगिक समाज की ओर संक्रमण के दौरान सामंती तत्वों की राजनीति से सांप्रदायिकता का उदय हुआ।"[1] भारत में सांप्रदायिक राजनीति का परिदृश्य आज इतना भयानक रूप धारण कर चुका है कि उसने सामाजिक संबन्धों को हर स्तर पर तहस–नहस करने की क्षमता अर्जित कर ली है। सांप्रदायिक राजनीति राजनेताओं के लिए सत्ता हथियाने का सबसे कारगर औजार बनती जा रही है। प्रौद्योगिकी और तकनीकी विकास के इस युग में भी सांप्रदायिक राजनीति का अयुक्तिक मिथक बहुत कारगर साबित हो रहा है। दिनोंदिन जटिल होती जा रही सांप्रदायिक राजनीति एक सामान्य नागरिक के सामने सवालों का अंबार खडी करती जाती है। राम पुनियानी पूछते हैं "लोकतांत्रिक समाज– जिसमें सभी नागरिक शांति और सद्भाव के साथ रहते हैं– अपनी धार्मिक पहचानों के प्रति इतना सचेत क्यों हो गया है ? समाज, जिसे गरीबी, भूख और बीमारी के उन्मूलन में लगा होना चाहिए था ऐसे बेकार के मुद्दों में क्यों उलझ गया है जिनका सामाजिक प्राणी होने के नाते हमारे जीवन से कुछ लेना–देना नहीं है ? इस उप महाद्वीप में गढे गए सांप्रदायिकता के सिक्के ने पूरे देश को अपनी काली लंबी छाया के आगोश में कैसे ले लिया? और वास्तविक सामाजिक समस्याओं को दरकिनार क्यों कर दिया गया है? "[2] इन सवालों का कोई सीधा समाधान आज किसी के पास नहीं हैं। फिर भी इन सवालों के कारणों को स्पष्ट पहचाना जा सकता है। इन कारणों को पहचानना ही समाधान का पहला सोपान है। राम पुनियानी के मत में "यह राजनीतिक नेतृत्व के कुछ तत्वों द्वारा खेले जा रहे सांप्रदायिक राजनीति के खेल की भयानक अभिव्यक्ति है। सांप्रदायिक राजनीति सभी सामाजिक पहचानों पर धर्म का मुखौटा लगा देती है।"[3] इन धार्मिक मुखौटों की पहचान सबसे महत्व पूर्ण है। पर प्रायः हम अपनी सहज बुद्धि यानि कांमन सेन्स से इन मुखौटों को पहचानने में चूक जाते हैं। क्योंकि सांप्रदायिक मिथक हमारे दिमाग में इस कदर रच बस गया होगा कि उसे अलग से पहचानना बहुत मुश्किल का काम हो जाता है।" लोगों के दिमागों में तथा विद्रूपित पाठ्यपुस्तकों के जरिए इतिहास के सांप्रदायिक रूप को वैधता मिल गयी है, जहाँ आम बहुसंख्यक लोगों के जीवन पैटर्न और सामाजिक संबन्ध प्रणाली को पृष्ठभुमी में धकेल दिया गया है । लोगों के जीवन पर बल और 'सामाजिक संबन्धों 'की उचित समझ से कई पूर्वाग्रह खत्म हो सकते हैं और सच्चाई उजागर हो सकती है "[4]। हमारी सहज बुद्धि से सांप्रदायिक निर्मिति के सच को न पहचान पाने की इस स्थिति को पियरे बोर्दिओ 'डोक्सा' (Doxa) कहते है । सतीश देशपाण्डे के अनुसार। "Bourdieu's version of commonsense is his notion of the 'doxa' or that portion of our world that seems so self evident that it is silently accepted& because it goes without saying and because we are not aware that things could possibly could be otherwise- The doxa is the sphere of socially invisible unanimity that precludes both orth & doxy and hetero (doxa) unlike them it refuses to recognize the presence of other opinions and hence the possibility of dispute-"[5] अर्थात दुनिया के बारे में हमारा विश्वास जो बिना किसी सवाल के स्वीकार किया जाते है , जो बिल्कुल स्वाभाविक लगे और विश्वास की किसी भी प्रकार दूसरी तरह होने की सारी संभावनाओं को अनजाने ही निरस्त कर देता है उसी को बोर्दिओ 'डोक्सा' कहते हैं। यही 'डोक्सा' सामाजिक जीवन को किसी द्वन्द्व के बिना सत्ता के अनुकूल नियंत्रित रखने में भारी मात्रा में सहायता पहुँचाता है। भारतीय संदर्भ में सहज–बुद्धि की इस प्रणाली को समझना बहुत महत्वपूर्ण

ISSN: 2455-2232

Impact Factor: RJIF 5.22

International Journal of Hindi Research (Pushpanjali)

Online and Print Journal Indexed Journal Refereed Journal Peer Reviewed Journal

Volume 4 Issue 4 Jul-Aug 2018

Published By
Gupta Publications

ISSN: 2455-2232
Online Available at www.hindijournal.com

International Journal of Hindi Research

Editorial Board

Editor-in-chief

Dr. Deepa Dattatray Kuchekar (M.A., M.Phil., Ph.D.)
Associate Professor,
Department of Hindi, Research Centre, K.T.H.M. College, Nashik, Maharashtra, India

ASSOCIATE EDITOR

Dr. Deepa Dattatray Kuchekar (M.A., M.Phil., Ph.D.)
Associate Professor
Department of Hindi,
Research Centre, K.T.H.M. College,
Nashik, Maharashtra, India

Dr. Madhvi Sharma
Principal
D B Snatkottar Mahavidyalaya,
Kherli, Alwar, Rajasthan, India

Dr Poornima R (MA, M Phil, PhD)
Associate Professor
Head, Department of Hindi,
Ssv College, Valayanchirangara,
Perumbavoor, Kerala, India

Dr. Rajesh Mishra (Ph.D)
Associate Professor
Hindi Department,
Ghasidas Central University,
Bilaspur, Chhattisgarh, India

Poonam (PhD)
Lecturer
Lakshmibai College,
Delhi University,
New Delhi, India

Dr. Kusum Mishra (Ph.D (Hindi), M.Ed., M.A., UGC-NET, CCC)
Assistant Professor
Department of Hindi,
Jawahar Lal Nehru P. G. College,
Barsgaon, Gorakhpur Uttar Pradesh,
India

Dr. Anil Kumar Singh (Ph.D., M.Phil, M.A in Hindi)
Assistant Professor
Department of Hindi, Pannalal Girdharlal Dayanand Anglo Vedic College, University of Delhi, Pannalal Girdharlal Dayanand Anglo Vedic College, India

Dr. Ashok Tukaram Jadhav (M.A, NET, Ph.D)
Assit. Professor
Kai. Babasaheb Deshmukh Gorthekar,
Arts, Commerce & Science College Umri,
Nanded, Maharashtra, India

Amarendra Kumar Srivastava (Ph.D)
Assistant Professor
Amity University, Lucknow,
Uttar Pradesh, India

Dr. Abha Tyagi (M.A (Hindi, Sanskrit) Ph.D.)
Principal
Hindi, Vaish Girls College,
Samalkha, Panipat, Haryana, India

Dr. Rama Arya (Ph.D.)
Associate Professor
Department of Hindi,
Jiwaji University, Gwalior,
Madhya Pradesh, India

Dr. Bandana Jha (Ph.D)
Associate Professor
Department of Hindi,
Vasanta College for Women,
Varanasi, Uttar Pradesh, India

Dr. Umashankar Tripathi (Ph.D)
Principal
Veerbhumi Govt. P.G. College,
Mahoba, Uttar Pradesh, India

Dr. V Anbumani (M.A., M.Phil., Ph.D(Hindi), M.A(Economoics)., MBA(HR)., PGDSD., PGDT., PGDJ)
Associate Professor
Department of Hindi and Other Languages,
Kongu Arts and Science College,
Erode, Tamil Nadu, India

Sarim Abbas (Ph.D. (Philosophy))
Assistant Professor
M.s.k.s. Kushwaha Memorial Degree College,
Dr. B. R. Ambedkar University,
Agra, Uttar Pradesh, India

Dr. Vandana Kumar (M.A., M.Phil., Ph.D)
Assistant Professor Hindi
Department of Hindi, Goverment Nagarjun College of Science Raipur,
Raipur, Chhattisgarh, India

Dr. Dina Nath Maurya (Ph.D)
Associate Resourse
Azim Premji Foundation,
Pauri Garhwal, Uttrakhand, India

Dr. Mahendra Sawant (B.A. BPED, MPED, NET, Ph.D, PGDSM, PGDEPMA)
Assit. Prof. (Incharge-official Language Hindi)
Sports Authority of India,
LNCPE, Kariyavattom, Trivendrum,
Kerala, India

Dr. Ade Santosh R (M.A, M.Phil, Ph.D, SET/NET)
Assisti. Prof.
Department of Hindi,
Sant Ramdas Arts, Commerce & Science College, Ghansawangi, Jalna, Maharashtra, India

Kiran Grover
Associate Professor
PG Department of Hindi,
D A V College, Abohar, Punjab, India

Dr. Shiv Datt Sharma
Associate Professor
Govt. College Dhaliara, Kangra,
Himachal Pradesh, India

Dilip Kumar Jha (MA, B.ed, P hd, Net Qualified, Bet or Slet Qualified)
Post Graduate Hindi Teacher
Fort Gloster Vidyalaya Higher Secondary,
Kolkata, West Bengal, India

Dr. Rahul Uthwal (M.A.(Hindi), M.A. (Sociology), B.D., M.Div, Ph.D)
India Army Institute of National Integration,
College of Military Engineering Campus,
Dapodi, Pune, Maharashtra, India

ASSISTANT EDITOR

Santosh Kumar
Assistant Professor
Department of Hindi,
Guru Ghasidas University,
Bilaspur, Chhattisgarh, India

Lakshmi Prasad Karsh (M. Phil., Ph D)
Teacher
Department of Hindi,
Teaching Department,
Guru Ghasidas Kendriya Vishwavidyalaya,
Koni, Bilaspur, Chhattisgarh, India

Dr. Vinod Kumar (M.Phil, Ph.D (Hindi))
Assistant Professor
Department of Arts & Languages,
Lovely Professional University,
Phagwara, Punjab, India

Dr. K.Jayalakshmi (M.A, M.Phil, Ph.D)
Assistant Professor
Department of Languages,
School of Social Sciences and Languages,
Vit University, Vellore

Vinod Kumar (M.A.(Hindi), UGC-NET, Ph.D)
Assistant Professor
Head, Department of Hindi,
Bhag Singh Khalsa College for Women,
Kala-tibba, Abohar, Punjab, India

Dr. Shashi Sharma (M.A, Ph.D.)
Teacher
Hindi Department,
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya,
Bagdogra, West Bengal, India

Dr. Renu Pandey (P.hd.)
Assistant Professor
Maharaja Agrasen Mahavidyalaya,
Bareilly, Uttar Pradesh, India

Year: **2018**, Volume: **4**, Issue: **4**
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
Online Available at www.hindijournal.com

International Journal of Hindi Research

01. डॉ0 नरेंद्र कोहली का आध्यात्मिक चिंतन (महासमर के 'गीतासार' के सन्दर्भ में)
Authored by: पूजा भट्ट, डॉ0 सरला पण्ड्या
Page: 01-04

02. कृषि : जल प्रदूषण का एक अनियत स्रोत
Authored by: प्रगति प्रामाणिक, बिदिशा चक्रवर्ती, ईशा चन्द, रश्मि मित्तल
Page: 05-06

03. लोकभाषा अंगिका के प्रमुख शब्दों की उत्पत्ति एवं यात्रा
Authored by: पुलकित कुमार मंडल
Page: 07-09

04. अल्पमत सरकार की स्थिति में वैकल्पिक उपाय
Authored by: ममता डांगी
Page: 10-12

05. रूद्र शिव की वैदिक अवधारणा-पाशुपत सम्प्रदाय के प्रवर्तक एवं आचार्य
Authored by: डॉ0 सत्येन्द्र कुमार मिश्र
Page: 13-16

06. सूचना प्रौद्योगिकी के संदर्भ में सामकालीन कविता का उत्तर पाठ
Authored by: महेष एस0
Page: 17-20

07. मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में निम्नवर्गीय पात्र:
Authored by: कविता गुप्ता
Page: 21-22

08. प्रणामी परमधाम : स्वरुप और सामयिकी
Authored by: प्रो0 राज कुमार लहरे
Page: 23-24

09. अध्यात्म एवं जीव-जगत
Authored by: श्रीमती निधी सिंह
Page: 25-27

10. समाजवादी एंव यथार्थपरक सामाजिक उपन्यासों में अभिव्यक्त जीवनदर्शन
Authored by: डॉ0 दिलीप कुमार झा
Page: 28-29

International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 4; July 2018; Page No. 17-20

सूचना प्रौद्योगिकी के संदर्भ में सामकालीन कविता का उत्तर पाठ

महेष एस॰
शोधार्थी, कोच्चिन विश्वविद्यालय, कोच्चिन, केरल, भारत।

सारांश
समकालीन समय सूचना प्रौद्योगिकी के विस्फोट का युग है। प्रतिपल परिवर्तित इस सैबर दुनिया में चौंधिया गयीं आँखों से सच्चाई को देख पाने में मनुष्य लगातार असमर्थ होते जा रहे हैं। पूरी परियोजना के तहत निर्मित छद्म सामाजिक यथार्थ मनुष्य को लगातार अपनी जड़ों से अलग करता जा रहा है। समकालीन भारत की इस यथार्थ को समकालीन हिन्दी कवि शिद्धत से पहचान रहे हैं। प्रस्तुत आलेख समकालीन कविता की इसी प्रसंगिकता को दर्शाने का एक प्रयास है।

मूल शब्द : सूचना प्रौद्योगिकी, समकालीन कविता।

प्रस्तावना

पृथ्वी पर मानव का आविर्भाव अनुमानतः पच्चीस लाख साल पहले हुआ था। पूरे विश्व के इतिहास में यह पच्चीस लाख साल अन्य जीव जन्तुओं को अपने नस्ल विकसित करने केलिए उपलब्ध सालों से बहुत कम रहा है। फिर भी इस कम समय-सीमा के तहत मानव दुनिया की आहार श्रेणी में सबसे ऊपर का स्थान ग्रहण कर सका है। मानव प्रजाति की त्वरित व वैविध्य पूर्ण विकास प्रणाली का इतिहास विश्व के इतिहास में सबसे बेजोड़ है। संज्ञात्मक क्रान्ति (Cognitive Revolution) से प्रादुर्भूत मानव संस्कृति कृषि क्रान्ति से गति पाकर औद्योगिक क्रान्ति से पल्लवित होकर अब सूचना क्रान्ति तक पहुंच चुकी है। "तीन महत्वपूर्ण क्रान्तियों ने मानव इतिहास को स्वरूप दिया है : 70,000 साल पहले संज्ञात्मक क्रान्ति ने इतिहास का श्री गणेश किया। 12000 साल पूर्व कृषि क्रान्ति उस में तीव्रता लायी। वैज्ञानिक क्रान्ति जो मात्र 500 साल पुराना है, अब पूरे इतिहस को बदलने में सक्षम है"[1] सूचना क्रान्ति तक आते - आते मानवीय संबन्ध ने जैविक उद्विकास की सारी प्रणालियों को एक प्रकार से बैपास ही कर दिया "जब से संज्ञात्मक क्रान्ति शुरु हुई तब से मानव अपनी चारित्रिक विशेषताओं को तीव्र गति से जैविक उत्परिवर्तन की सहायता के बिना आने वाली पीढ़ी के लिए बदलने में सक्षम हुआ"[2] इस प्रकार मनुष्य ने अपने जैविक उत्परिवर्तन की सीमाओं को अपने मेधा के बल पर पार किया। पर अब यही मेधा बल भस्मासुर के समान मनुष्य की सहज जैविक स्थिति को तोड़ मरोड़ रहा है।

मानव प्रजाति की त्वरित व वैविध्य पूर्ण विकास प्रणाली के तहत हर स्तर पर संपन्न सामाजिक शक्ति तंत्रों की स्थिति की पहचान और उसकी सत्ता मीमांसा समकालीन मानवीय संबन्धों को समझने का एक उत्तर पाठ तैयार करती है। समकालीन समय नित नवीन संकीर्ण सामाजिक संबन्धों को रच रहा है। इस ज्ञान पर आधारित तकनीक मानवीय संबन्धों को शक्ति तन्त्र के नये- नये ज्ञान बिम्बों द्वारा लगातार परिभाषित करते जा रहा है। ज्ञान बिंबों की नवीन स्थिति मानवीय सामाजिक संबन्धों के जैविक आधार के सामने हर स्तर पर चुनौती खड़ी करती है। यह नवीन स्थिति दैनिक जीवन में छवियों के रूप में हमारी आँखों के सामने है जो लगातार हमारी जैविक संज्ञात्मक स्थिति को उलट-पलट रही है। विजय कुमार अपनी पुस्तक 'अंधेरे समय में विचार' में कहते है "20 वीं सदी तक आते–आते तो यह माना जाने लगा कि कोई भी समाज आधुनिक बनता है तो उसकी एक प्रमुख गतिविधि निरंतर नई-नई छवियों को निर्मित करना और उसका उपभोग करते रहना है। धीरे-धीरे वास्तविकता की ये गढ़ी गई छवियाँ ही वास्तविकता को निर्धारित करने लगती हैं। इन दी हुई छवियों के आधार पर हम वास्तविकता के बारे में अपनी अवधारणाएं बनाते हैं। ये छवियां वास्तविकता को लेकर हमारी ज़रूरतों का अनुकूलन और नियंत्रण करती हैं। हर आधुनिक समाज में ये छवियां इस संसार के बारे में हमारे प्रत्यक्ष अनुभवों को खारिज करती जाती हैं।"[3] मानव की उद्विकास प्रणाली के इतिहास में इस से पहले कभी भी उनकी सहज बुद्धि को चकरा देने में सक्षम कोई ज्ञान बिंब की निर्मिति नहीं हुई थी।

इस प्रकार मानवीय संबन्धों को प्रतिस्थापित करती सूचना ज्ञान, धन और हिंसा के त्रय द्वारा एक ऐसे ग्लोबल संस्कृति को जन्म दे रही है जिसके तहत हर मानवीय व्यवहार कृत्रिम बुद्धि द्वारा परिभाषित होगा।

KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
A REFEREED BLIND PEER REVIEW QUARTERLY JOURNAL
KIJAHS/ JUL-SEP (2018) /VOL-5/ISS-3/A7 PAGE NO.34-38
ISSN: 2348- 4349 WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG

रवीन्द्र कालिया की कहानियों में स्त्री - पुरुष संबन्धों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

[1]महेष. एस
[1]शोधार्थी, कोचिन विश्वविद्यालय, कोचिन 22

Received August 29th, 2018; Revised September 13th, 2018; Accepted September 27th, 2018

सारांश

प्रस्तुत आलेख में मैंने रवीन्द्र कालिया की कहानियों में अभिव्यक्त स्त्री –पुरुष संबन्धों की पेचीदगी को प्रेम के त्रिभुज सिद्धान्त के आधार पर विश्लेषित करने का प्रयास किया है। रवीन्द्र कालिया अपनी कहानियों में शिल्प के सौष्ठव को तराशने से बढ़कर मानवीय संबन्धों की गहराई को उसी तीव्रता से अनुभव करने एवं अभिव्यक्ति देने की कुव्वत रखने वाला रचनाकार है। वैसे तो उनकी रचना धर्मिता कोई भी मनोवैज्ञानिक या समाज शास्त्रीय सिद्धान्तों की चौखटे तक सीमित नहीं है फिर भी रवीन्द्र जी की कहानियों को परखने पर उसमें स्त्री - पुरुष संबन्धों की पेचीदगी को मनोवैज्ञानिक एवं जैविक उद्विकास सिद्धान्त के तहत सही मायने में समझने का एक आधार हमें ज़रूर मिलता है।

रवीन्द्र कालिया की कहानियों में पात्रों के संवेदनात्मक क्षणों की अभिव्यक्ति का स्वर पढ़ने के बाद भी पाठकों के दिल में अनुगुंजित रह जाता है। ममता कालिया के शब्दों में "रवीन्द्र कालिया की कहानियों की प्रियता और लोकप्रियता अप्रतिम रही है क्योंकि इनमें जीवन की धड़कन अपनी पूरी ऊष्मा के साथ मौजूद है। वे अपनी रचनाओं में बारीक कलागत तराश या बुनावट करने के हिमायती नहीं थे। कई बार रवि की कहानियों में मण्टो की कहानियों जैसा कोई सुलगता सवाल होता है।"[1] उनकी कहानियों में मानवीय संबन्धों के बीच सामाजिक जीवन की पेचीदगी के चलते उभरने वाला सुलगता सवाल कोई एकयामी नहीं होता। रवीन्द्र जी की कहानियों में स्वातंत्र्योत्तर भारत के सामाजिक जीवन तथा अंतरंग संबन्धों की पेचीदगी की तीव्र संवेदनात्मक अभिव्यक्तियों को नापना कोई आसान कार्य नहीं है। कोई भी मनोवैज्ञानिक या समाज शास्त्रीय सिद्धान्तों की चौखटा उनकी तीव्र संवेदनात्मक अभिव्यक्तियों को उसी तीव्रता से समाहित करने की क्षमता नहीं रखती।

दुनिया का सर्वाधिक जटिल संबन्ध मानवीय संबन्ध ही है। उसमें भी सर्वाधिक जटिलता प्रेम युग्मों के स्वच्छंद प्रेम संबन्ध में पायी जाती है। स्वच्छंद प्रेम संबन्ध मनुष्य के जैविक उत्परिवर्तन से गहरी रूप से जुड़ा हुआ है। दुनिया में सबसे असहाय होकर जन्मने वाले मानव शिशु की परवरिश केलिए प्रेम युग्मों का साथ बने रहना उद्विकास परक (Evolutionary) आवश्यकता ही है। जीवन जॉंव तोमस अपने 'रति रहस्य' नामक पुस्तक में कहते है " स्वच्छंद प्रेम मनुष्य को अपने जोडे के साथ मात्र यौन संबन्ध के परे होकर युग्मप्रेम संबन्ध को दीर्घकाल तक बनाये रखने के लिए मददगार होता है। मानव शिशु का पालन-पोषण प्रकृति का सबसे जद्दोजहद भरा मातृत्वपूर्ण कार्य है। अपने जीवन काल में सबसे ज़्यादा संरक्षण की

Copyright © 2018 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org